कठोपनिषद्

नचिकेता के तीन वरों का विश्लेषण

नचिकेता के तीन वरों का संबंध क्रमशः लोक, परलोक और आनंदलोक से है। उसका पहला वर था कि उसके पिता की मानसिक उद्विग्नता समाप्त हो जाय। दूसरे वर के रूप में उसने यमराज द्वारा स्वर्ग की साधनभूत अग्नि के उपदेश देने की प्रार्थना की। नचिकेता का तीसरा वर था कि संसार में आत्म-तत्त्व को लेकर विरोषाभास है। कुछ मानते हैं कि मृत्यु के उपरांत आत्मा का अस्तित्व रहता है और कुछ के अनुसार कुछ भी शेष नहीं बचता। यमराज के मुख से इसी सत्य को जानना उसका तीसरा वर था। इस प्रकार नचिकेता ने पहले प्रश्न से अपने अप्रसन्न पिता को प्रसन्न करने का वर मांगकर अपने लौकिक कर्त्तव्य का निर्वाह किया क्योंकि एक पुत्र के लिए पिता की प्रसन्नता इस संसार का सर्वोपरि धर्म है और नचिकेता अपने पिता के अप्रसन्न होने के कारण ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था और वह पिता को प्रसन्न करने की अपनी इच्छा को पूरा किए बिना मृत्यु को प्राप्त हो गया। कठोपनिषद् में पुत्र के कर्त्तव्य पर प्रकाश डाला गया है-

शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद् वीतमन्युर्गोतमो माऽभि मृत्यो।

त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे॥ कठ. 1.1.10॥

इस लोक के उपरांत स्वर्गलोग अर्थात परलोक को प्राप्त करना मनुष्य अभीष्ट लक्ष्य होता है- 'स्वर्गकामो यजेत'। इसीलिए नचिकेता ने स्वर्ग की साधनभूत अग्नि को जानना चाहा जो परलोक से सम्बद्ध प्रश्न था-

स त्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रबूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम।

स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण।।कठ.1.1.13॥

आत्मतत्त्व का ज्ञान आनन्दलोक की उपलब्धि करता है और नचिकेता अपने तीसरे प्रश्न से यमराज को आत्मतत्त्व के उपदेश के लिए विनती करता है-

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके ।

एटाद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीय: ।।कठ.1.1.20॥

यमराज ने नचिकेता से तीन वर मांगने के लिए कहा, इसके पीछे कारण यह था कि नचिकेता उनके घर में तीन दिन तक बिना कुछ खाये पिये पड़ा रहा। प्रसंग इस प्रकार है कि जब नचिकेता के पिता ने उसको दान के रूप में मृत्यु अर्थात् यम को दे दिया तो वह यम के घर पहुंचता है, किन्तु यम घर पर नहीं होते हैं। यम के घर पर उसने अन्न-जल कुछ भी ग्रहण नहीं किया क्योंकि उसका मानना था कि दान दी गयी वस्तु दान पाने वाले को उसी रूप में प्राप्त होनी चाहिए और यदि वह भोजनादि कर लेता है तो संभव है कि वह तन और मन से वैसा न रहे जैसा वह भेजा गया था। इस कारण उसने यम के घर भोजन आदि नहीं किया। संयोगवश यम तीन दिन तक घर नहीं आए और नचिकेता भूखा-प्यासा ऐसे ही उनके घर में पड़ा रहा। जब यम घर वापस आए तो अपनी पत्नी से अतिथि के आगमन का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानकार अत्यंत दुःखी हुए कि उनके घर में एक अतिथि का अपमान हुआ। जिस घर में अतिथि का अपमान होता है उस गृह स्वामी के आशा, प्रतीक्षा, संगत, सुनृता, इष्ट और आपूर्त्त- सभी नष्ट हो जाते हैं-

आशाप्रतीक्षे सङ्गतं सुनृताञ्च इष्टापूर्ते पुत्रपशूञ्च सर्वान्।

एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे॥कठ. 1.1.8॥

अज्ञात प्राप्य वस्तु की प्रार्थना को आशा कहते है। ज्ञात प्राप्य वस्तु की प्रार्थना को प्रतीक्षा कहते हैं। संगत का अर्थ होता है सत्संग का परिणाम। प्रिय वाक्य बोलने के

फल को सुनृता कहते है। किए गए यज्ञ के फल को इष्ट कहते हैं। सामाजिक परोपकार के कृत्य के फल को आपूर्त्त कहते हैं।

यम के घर में नचिकेता अतिथि था जहां वह तीन दिन तक भूखा और प्यासा पड़ा रहा। यह अतिथि का अपमान था। इसीलिए यम ने उसको तीन दिनों तक अपमान सहने के कारण तीन वर मांगने का अनुरोध किया।

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि नचिकेता के इन तीन प्रश्नों में मनुष्य के जीवन का सार छिपा है। जीव की अनंत यात्रा के क्रम को बताते हुए उसके यथार्थ लक्ष्यों को इन प्रश्नों और उनके उत्तरों में सिमटा दिया गया है। इस प्रश्नोत्तर प्रणाली के माध्यम से सत्य को सुस्थापित किया गया है। जीव के समस्त संशयों या भ्रमों का निराकरण किया गया है। शरीर का नाश जीव के सम्पूर्ण नाश का द्योतक नहीं है अपितु देहनाश के उपरांत भी कुछ शेष रहता है और वह शेष ही आत्मा है जो अनश्वर, अविनाशी और शाश्वत है। जीव की अस्तित्वविहीनता को नकारा गया है। सांसारिक सुखों और इच्छाओं की क्षणभंगुरता को इस सम्पूर्ण वार्त्तालाप से समझाया गया है।

यम-नचिकेता संवाद भारतीय चिंतन और दर्शन का मूल है और अद्वितीय सांस्कृतिक विरासत है।